



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छत्तीसगढ़ की धार्मिक नगरी खरौद: सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन

Aastha Pandey¹ Dr. Ramratan Sahu²

¹ Research Scholar, Department of History, Kalinga University, Naya Raipur, Raipur Chhattisgarh

² Research Co-Guide, Department of History, CV Raman University, Kota, Bilaspur Chhattisgarh

सारांश

यह शोध लेख छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर-चांपा जिले में स्थित खरौद नगर के धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण करता है। लक्ष्मणेश्वर महादेव मंदिर, इंदल देव मंदिर, स्थानीय लोककथाएँ और पुरातात्विक स्थलों की स्थापत्य कला और परंपराएँ इस नगर को क्षेत्रीय धरोहर के केंद्र में स्थापित करती हैं। अध्ययन मुख्यतः मंदिरों के निर्माण, आयोजन, लोक मान्यताओं, सामाजिक अनुष्ठानों तथा ऐतिहासिक संदर्भों पर आधारित है।

भूमिका

खरौद नगर अपनी प्राचीनता और धार्मिक महत्ता के साथ छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक केंद्रों में गिना जाता है। शिवरीनारायण के समीप इसका भौगोलिक स्थान इसे क्षेत्रीय तीर्थ का रूप देता है। यहाँ के महत्वपूर्ण मंदिर, लक्ष्मणेश्वर महादेव, इंदल देव, शबरी—सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक रूप से उल्लेखनीय हैं।

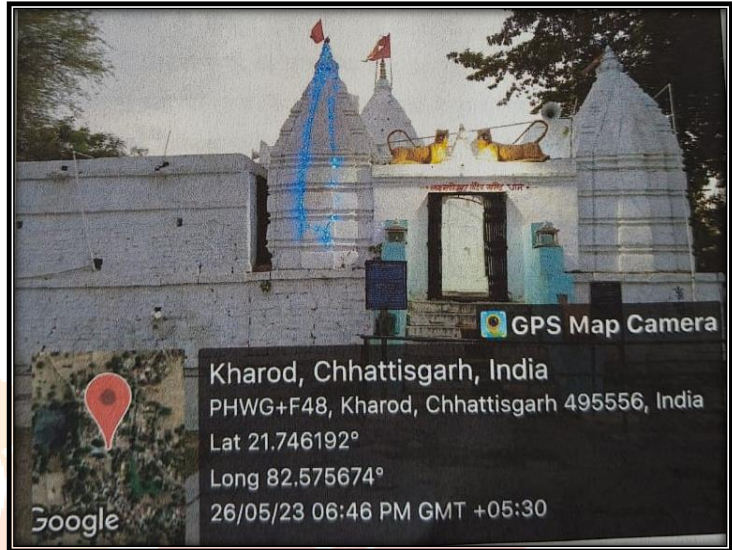
विधियाँ

शोध में ऐतिहासिक अभिलेखों, क्षेत्रीय लोकवृत्तांत, स्थापत्य शैली का विश्लेषण और पुरातात्विक स्रोतों के साथ उपलब्ध साक्ष्यों का समावेश किया गया है। मुख्य मंदिरों के स्थल भ्रमण, शिलालेखों की समीक्षा और स्थानीय जनमानस से प्राप्त कथाओं को प्रामाणिकता के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

प्रमुख विश्लेषण

1. लक्ष्मणेश्वर महादेव मंदिर

खरौद का लक्ष्मणेश्वर महादेव मंदिर छत्तीसगढ़ की ललित कला के प्राचीन केंद्र और धार्मिक तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है। रायपुर से 120 कि.मी. तथा शिवरीनारायण से 3 कि.मी. दूर स्थित इस मंदिर का निर्माण चन्द्रवंशी शासकों द्वारा आठवीं शताब्दी में किया गया था। जिसे बाद में राजा खड्गदेव ने जीर्णोद्धार किया। मंदिर का वास्तुशिल्प अद्भुत है। कृष्णपत्थर की दीवारों, विशाल चबूतरा और गर्भगृह। विश्व प्रसिद्ध लक्षलिंग में एक लाख सूक्ष्म छिद्रों की विशेषता है। जिसमें पातालगामी और अक्षय छिद्र क्रमशः जल को समाहित रखते हैं। मंदिर के द्वार पर गंगा, यमुना, जय, विजय द्वारपाल, रावण व रामायण कथाओं की मूर्तियाँ, दोनों ओर शिलालेख, कृष्ण सब उसे स्थापत्य का जीवंत उदाहरण बनाते हैं। सावन और महाशिवरात्रि में लगने वाले मेले क्षेत्रीय लोक संस्कृति को जीवित रखते हैं। सिरपुर के सोमवंशी राजाओं द्वारा बने इस मंदिर में जागृत एवं खंडित शिलालेख में ईश्वरलिंग तथा इशानदेव नामक दो शासकों का उल्लेख है। यह ईसा सन् 1192 के एक शिलालेख में कल्याणश्री तृतीय तक हैहयों की पूरी वंशावली का विवरण है। लगभग 1300 साल पुराने सातवीं शताब्दी के इस मंदिर के गर्भ में एक अद्भुत और अनूठा शिवलिंग है। इसमें सवा लाख लिंग हैं। इस संबंध में प्राचीन मान्यता है कि कौशल्य विजय के पश्चात जब लक्ष्मण वापस अयोध्या लौट रहे थे तब वह कुटूर रोग से पीड़ित हो गए और वहां गिर पड़े। तब उन्होंने सवा लाख शिवलिंग बनाकर भगवान शंकर की आराधना किया। तब प्रसन्न भगवान ने उन्हें रोग मुक्त कर दिया। यहां हर वर्ष फरवरी माह में मेला लगता है और महाशिवरात्रि में बड़ा मेला लगता है। यह भी कहा जाता है कि लक्ष्मणेश्वर शिवलिंग पर सवा लाख चावल के दाने चढ़ाने से दर्शनार्थियों की हर मनोकामना पूरी होती है। तथा अर्धनारीश्वर के दृश्य खुदे हैं। इसी प्रकार दूसरे स्तम्भ में राम चरित्र से सम्बंधित दृश्य जैसे राम, सुग्रीव मित्रता, बाली का वध, शिव तांडव और सामान्य जीवन से सम्बंधित एक बालक के साथ स्त्री, पुरुष और डंडधारी पुरुष खुदे हैं। प्रवेश द्वार पर गंगा, यमुना की मूर्ति स्थित है। मूर्तियों में मकर और कच्छप वाहन स्पष्ट दिखाई देते हैं। उनके पार्श्व में दो नारी प्रतिमाएँ हैं। इसके नीचे प्रतिपार्श्व में द्वारपाल जय और विजय की मूर्तियाँ हैं। लक्ष्मणेश्वर महादेव के इस मंदिर में सावन मास में श्रावणी और महाशिवरात्रि में मेला लगता है। ऐसा माना जाता है कि यह रामायण कालीन स्थल है और लंका विजय के निमित्त भ्राता लक्ष्मण की विनती पर श्रीराम ने खर और दूषण की मुक्ति के पश्चात लक्ष्मणेश्वर महादेव का स्थापना की थी। श्रीराम और लक्ष्मण ने सीता की खोज के दौरान शबरी के आश्रम में आकर उसके पूज्य बेर खाए। इसी प्रसंग को लेकर इस स्थान को शबरी, नारायण कहा गया। ललितकला में यह बिज्जिकर शिवरीनारायण कहलाने लगा। प्राचीन काल में इस क्षेत्र में खर, दूषण का राज्य था। जो श्रीराम के हाथों वीरगति को प्राप्त हुआ था। कविताओं, उन्हीं के नाम पर यह नगर खरौद कहलाया। यह मंदिर नगर के प्रमुख देव के रूप में पश्चिम दिशा में पश्चिममुख स्थित है। मंदिर में चारों ओर पत्थर की मजबूत दीवार है। इस दीवार के अंदर 110 फुट लंबा और 48 फुट चौड़ा चबूतरा है जिसके ऊपर 48 फुट ऊँचा और 30 फुट गोलाकार शिव मंदिर स्थित है। मंदिर के अवलोकन से पता चलता है कि पहले इस चबूतरे पर बहुमंजिला मंदिर के निर्माण की योजना थी। क्योंकि इसके आधारभूत स्थापत्य में मंदिर की आकृति में निर्मित है। चबूतरे के ऊपरी भाग का परिक्रमा पथ



मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश के पूर्व स्थित है। मंदिर के शिखर पर एक विशालकाय शिखर का निर्माण है। इस शिखर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें शिवलिंग में एक लाख छिद्र है। इसीलिए इसका नाम लखलिंग भी है। सभा मंडप के सामने के भाग में सत्यनारायण मंडप, नन्दी मंडप और भोजशाला है।

मंदिर के मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही सभा मंडप मिलता है। इसके दक्षिण तथा वाम भाग में एक-एक शिलालेख दीवारों में लगा है। दक्षिण भाग के शिलालेख की भाषा अस्पष्ट है अतः इसे पढ़ा नहीं जा सकता। उसके अनुसार इस लेख में आठवीं शताब्दी के इन्द्रल तथा ईशानदेव नामक शासकों का उल्लेख हुआ है। मंदिर के वाम भाग का शिलालेख संस्कृत भाषा में है। इसमें 44 श्लोक हैं। चन्द्रवंशी हैहयवंश में रत्नपुर के राजाओं का जन्म हुआ था। इनके द्वारा अनेक मंदिर, मठ और तालाब आदि निर्मित कराए गए थे। मंदिरों के शिलालेखों में तदनुसार रत्नदेव तृतीय की रत्ना और पद्मा नामक पत्नी से रूपनारायण नामक पुत्र हुआ। पद्मा से सिंहतुल्य पराक्रमी पुत्र खड्गदेव हुआ जिसने लक्ष्मणेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। इससे पता चलता है कि मंदिर आठवीं शताब्दी तक जीर्ण हो चुका था जिसके उद्धार की आवश्यकता पड़ी। इसी आधार पर कुछ विद्वान इसे छठी शताब्दी का मानते हैं।

2^० धार्मिक लोककथाएँ

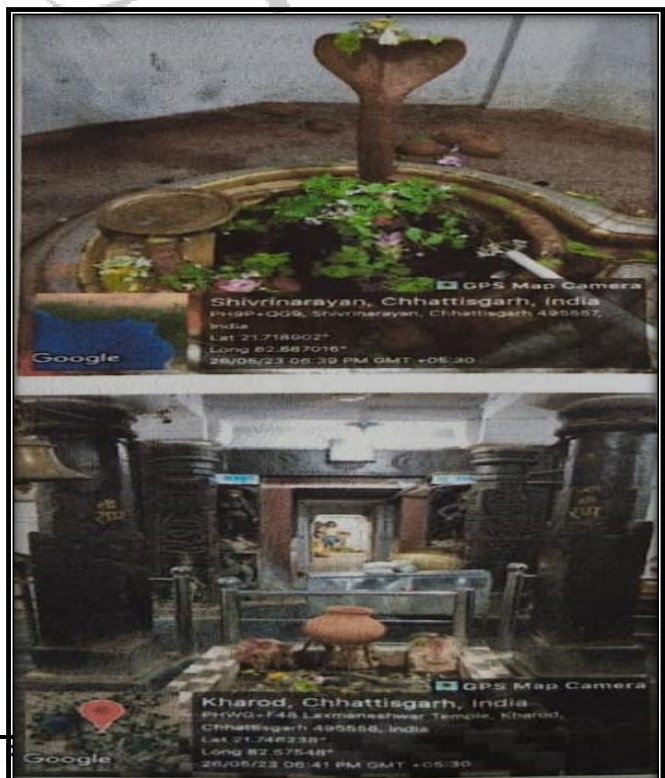
लोककथाओं के अनुसार लंका विजय के पश्चात लक्ष्मण ने रोगमुक्ति हेतु यहीं एक लाख शिवलिंग स्थापित किए। जनश्रुति है कि लक्षलिंग पर श्रद्धा से अर्पित एक-एक चावल का दाना भक्तों को भगवान लक्ष्मण के स्वप्नदर्शन व रक्षा का फल देता है। साथ ही जीवहत्या निरोध का भाव उपासना में समाहित है।

3^० इंदल देव मंदिर

माझापारा क्षेत्र में स्थित इंदलदेव मंदिर कृष्णशिवमाभिमुख है। ईंट निर्माण, गंगा, यमुना की मूर्तियाँ और ऊपर ब्रह्मा, विष्णु, महेश की प्रतिमाएँ स्थापत्य की मौलिकता और प्राचीनता की साक्षी हैं। इंदल शब्द इंद्र का अपभ्रंश है और इस मंदिर का उल्लेख लक्ष्मणेश्वर मंदिर के अभिलेखों में मिलता है। भारत के छत्तीसगढ़ प्रांत में स्थित खरौद नगर के मध्य माझापारा में प्राचीन गढ़ के लगा अत्यंत प्राचीन ईंट से बने पश्चिममाभिमुख मूर्ति विद्यमान। लेकिन मूर्तिकला से सुसज्जित इंदलदेव का मंदिर है। इंदल शब्द इंद्र का अपभ्रंश है। इसे इंदल देव कांदक अधिक उपयुक्त है। इंदलदेव शब्द का उल्लेख एक राजा के नाम में मिलता है। इस मंदिर की पश्चिममाभिमुखता होना आश्चर्य की बात है। 13वीं शताब्दी की एक शिलालेख में मिलता है। इस मंदिर के द्वार पर लक्ष्मणेश्वर मंदिर के प्रवेश द्वार की तरह गंगा और यमुना की मूर्ति स्थित है। द्वार के ऊपर निर्मित ब्रह्मा, विष्णु और महेश की प्रतिमा स्थित है।

किंवदंती

मान्यता है कि मंदिर के गर्भगृह में श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण द्वारा स्थापित लक्ष्मणेश्वर लिंग है। इसे लक्ष्मणेश्वर महादेव भी कहा जाता है। यहां की खास बात सवा लाख छिद्र है। इसमें एक पातालगामी लक्ष्मण छिद्र है जिससे जितना भी जल डाला जाए वह सर्वदा समाहित हो जाता है।



इस लिंग पर लक्ष्मण छिद्र के पास अनेक छिद्र हैं। जिसमें जल स्थिर रहता है। इसे अब्दुत छिद्रलिंग भी कहते हैं। इन छिद्रों में एक ऐसा छिद्र भी है जिसमें जल स्थिर रहता है। इसे अब्दुत छिद्रलिंग कहा गया है। प्रसिद्धि के अनुसार जब राम प्रथम यात्रा पर वर्तमान अयोध्या नहीं पहुंचे थे। अंत में हाथ परिक्षण में राजा लक्ष्मणेश्वर रोगी होकर अपने साथ पुतुल रूप लेकर आये थे। प्रति वर्ष यहाँ महाशिवरात्रि के मेले में शिव की बारात निकाली जाती है। छत्तीसगढ़ में इस नगर को काशी के समान मान्यता है। कहते हैं भगवान राम ने इस स्थान से नर और द्रूपण नाम के असुरों का वध किया था। इसी कारण इस नगर का नाम खरौद पड़ा। यह खरौद छत्तीसगढ़ की काशी है।

निष्कर्ष

खरौद नगर छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक विरासत का सशक्त उदाहरण है। उसकी स्थापत्य कला, पुरातात्विक धरोहर और लोककथाएँ क्षेत्र के गौरव को निरंतर कायम रखती हैं। यह शोध स्थानीय अंचल की रूपरेखा, मान्यताओं और धरोहरों पर नई दृष्टि प्रदान करता है।

संदर्भ

1. गुसा, प्यारेलाल, प्राचीन छत्तीसगढ़, सन 1973, पृ. क्र 199 |
2. मिश्रा, अनिल, छत्तीसगढ़ अध्ययन, पृ. क्र 26-29 |
3. अग्रवाल, महावीर, छत्तीसगढ़ लोक नाट्य, पृ. क्र 48-49 |
4. प्रो. केशरवानी, अश्विनी, शिवरीनारायण देवालय एवं परम्पराएँ, 2016 को पुरालेखित |
5. चंद्राकर, नवीन, छत्तीसगढ़ इनसाइड स्टडी, पृ. क्र 25-28 |
6. शर्मा, तृषा, छत्तीसगढ़ इतिहास संस्कृति एवं परंपरा, 2004, पृ. क्र 9 |
7. गुसा, महावीर प्रसाद, सन्दर्भ छत्तीसगढ़, 1993, पृ. क्र 9-10 |
8. दास, जगमोहन, स्मृति ग्रन्थ, सन 1968, पृ. क्र 60-65 |
9. त्रिपाठी, हीराराम, शिवरीनारायण वैभव, रायपुर, 1997, पृ. क्र 27 |
10. छत्तीसगढ़ पर्यटन विवरणिका, 8 जून 2020 से प्राप्त हुआ, पृ. क्र 40-43 |